विजय कुमार

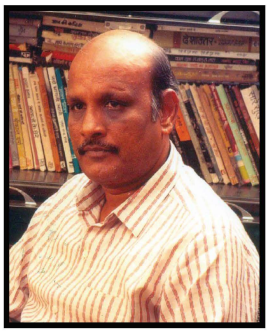

विजय कुमार का जन्म 11 नवम्बर 1948 ई० में मुम्बई में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा मुम्बई में ही हुई। उन्होंने एम० ए० (हिंदी) और पी-एच० डी० की डिग्री मुम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उनकी पहली कविता 'दोपहर' 1969 ई० में 'धर्मयुग' में छपी और पहला कविता संग्रह 'अदृश्य हो जाएँगी सूखी पत्तियाँ' 1981 में प्रकाशित हुआ । 1986 ई० में उनकी एक आलोचना की पुस्तक 'साठोत्तरी हिंदी कविता : परिवर्तित दिशाएँ' प्रकाशित हुई । उन्होंने चर्चित लघु पत्रिका 'पहल' के लिए समकालीन अफ्रीकी साहित्य और पाकिस्तानी शायर अफजाल अहमद सैय्यद की कविताओं के विशेष अंकों का संयोजन किया। उन्होंने रंगभेद के विरुद्ध लिखी गई अफ्रीकी कविताओं का अनुवाद 'अँधेरे में पानी की आवाज' नाम से किया। उनकी अन्य काव्यकृतियाँ हैं – 'अदृश्य हो जाएँगी सूखी पत्तियाँ', 'चाहे जिस शक्ल से' और 'रात-पाली'। अबतक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख, कविताएँ और समीक्षाएँ प्रकाशित हो चुके हैं ।

वे 1971 से 1975 तक 'नवभारत टाइम्स' (मुम्बई) में उपसंपादक रहे। उन्होंने भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (मुम्बई) में हिंदी विभाग के प्रभारी के रूप में भी काम किया ।

विजय कुमार की कविताओं को पढ़ते हुए इस बात का सुख होता है कि उनमें अपनी कविता के प्रति एक निर्मम तटस्थता है। ये कविताएँ एक उत्कट संवेदनशील और अंतर्मुखी कवि व्यक्तित्व की कविताएँ हैं । विजय कुमार की कविताएँ हमारे समय की उदासी, निराशा, तकलीफ और उन्हीं के बीच अभी भी बची हुई उम्मीद की कविताएँ हैं । उनकी कविता शहर में जन्मे, पले और शहर की शोकांत नियति से जुड़े व्यक्तित्व की कविता है, जो बाहर के सच को कुछ बने बनाए सूत्रों में नहीं, बल्कि अपनी गहन आंतरिकता में पाता है ।

प्रस्तुत कविता 'निम्मो की मौत पर' उनकी अद्यतन काव्य पुस्तक 'रात-पाली' से ली गई है । यह कविता निम्मो और उस जैसी घरेलू नौकरानी को लेकर लिखी गई है, जिसका महानगरीय समाज में अपना कोई अस्तित्व नहीं होता । ऐसे लोगों की अचानक मृत्यु पर किसी तरह का प्रश्न नहीं किया जाता । मुम्बई जैसे महानगर में भी कवि की दृष्टि समाज के अभावग्रस्त वंचित जन के प्रति एकाग्र दिखलाई पड़ती है । इससे कवि की मानवीय संवेदना का पता चलता है ।

निम्मो की मौत पर

वह भीगी हुई चिड़िया की तरह
फुरफुराती थी

हम जानते थे
अँधेरे कोने में दुबक
एक सूखी रोटी
और तीन दिन पुराना साग
वह चोरों की तरह खाती रही कई बरस

सालों साल उसने
चिट्ठी नहीं लिखी अम्मा को
टेलीफोन के पास
उसका फटकना निषिद्ध था

हमें मालूम था
लानतों, गाली, लात, घूँसों के बाद
लेटी हुई ठंढे फर्श पर
गए रात जब
उसकी आँखें मुँदती थीं
एक कंपन
पूरी धरती पर
पसर जाता था
उसकी थमी हुई हिचकियाँ
उसके पीहर तक
चली आती थीं

हर रोज
एक अनुपस्थित घाव
उसके शरीर के भीतर
कहीं रहा होगा
और शायद कुछ अनकही प्रार्थनाएँ नींद में

यह शरीर जो तीस बरस से
इस दुनिया में था
और तीस बरस
उसे रहना था यहाँ

पर एक दिन रेत की दीवार की तरह गिरी वह सहसा
उसके चले जाने में
कोई रहस्य नहीं था ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. निम्मो समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है ?
2. कवि ने निम्मो की तुलना 'भीगी हुई चिड़िया' से क्यों की है ?
3. निम्मो को जो यातनाएँ दी जाती थीं, उसे कविता के आधार पर अपने शब्दों में लिखें ।
4. 'उसकी थमी हुई हिचकियाँ उसके पीहर तक चली आती थीं' से कवि का क्या अभिप्राय है ?
5. इस कविता के माध्यम से कवि ने समाज के किस वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है ?

6. पूरी धरती पर कंपन पसर जाने का क्या कारण है ? स्पष्ट करें ।
7. 'वह चोरों की तरह खाती रही कई बरस' में कवि ने 'चोरों की तरह' का प्रयोग किस उद्देश्य से किया है ?
8. और शायद कुछ अनकही प्रार्थनाएँ नींद में - इस पंक्ति में 'प्रार्थनाओं को अनकही' क्यों कहा गया है ?
9. और तीस बरस उसे रहना था यहाँ - कहकर कवि हमें क्या बताना चाहता है ?
10. रेत की दीवार की तरह सहसा गिरने की क्या वजह हो सकती है ?
11. 'निम्मो की मौत पर' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है ? तर्क सहित उत्तर दें ।
12. ''यह शरीर जो तीस बरस से
    इस दुनिया में था
    और तीस बरस
    उसे रहना था यहाँ''
    – यहाँ निम्मो का कौन-सा दर्द अभिव्यक्त होता है ?

कविता के आस-पास

1. विजय कुमार के अब तक तीन कविता संकलन प्रकाशित हैं जिनमें महानगरीय बोध उनका केंद्रीय विषय है । इनके संकलन पुस्तकालय से उपलब्ध कर महानगरीय बोध की कुछ मनपसंद कविताएँ एकत्र कीजिए ।
2. विजय कुमार की तरह महानगरीय बोध की कुछ कविताएँ मंगलेश डबराल और असद जैदी ने भी लिखी हैं । इन कवियों के संग्रह उपलब्ध कर ऐसी कविताएँ चुनें और उनकी तुलना करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलें –
   चिड़िया, रोटी, गाली, रात, चिट्ठी, आँखें, हिचकियाँ, प्रार्थनाएँ
2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखें –
   अँधेरा, सूखा, पुराना, रात, अनुपस्थित, भीतर, निषिद्ध
3. प्रस्तुत कविता से पाँच क्रियापद छाँटकर लिखें ।
4. 'रेत की दीवार की तरह गिरना' मुहावरे का वाक्य प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट करें ।
5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची बताएँ –
   धरती, आँख, चिड़िया, रात, शरीर, दुनिया, रेत
6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें –
   (क) जो उपस्थित नहीं है ।
   (ख) जो कहा न जा सके ।
7. पाठ से अव्यय शब्दों को चुनें ।
8. उद्‌गम की दृष्टि से शब्द के भेद स्पष्ट करें –
   चिड़िया, पुरानी, रोटी, टेलीफोन, निषिद्ध, फटकना, पीहर, मुँदती, दुनिया, शायद, सहसा

शब्द निधि

फुरफुराती	:	पंख फड़फड़ाती
दुबक	:	छिलना
फटकना	:	निकट आना
निषिद्ध	:	जिसकी मनाही हो
लानत	:	भर्त्सना
पीहर	:	ससुराल
अनकही	:	जो कहा न गया हो
सहसा	:	अचानक